

नई कविता

नयी कविता

नयी कविता (1951 ई० से...): यों तो 'नयी कविता' के प्रारंभ को लेकर विद्वानों में विवाद है, लेकिन 'दूसरे सप्तक' के प्रकाशन वर्ष 1951 ई० से 'नयी कविता' का प्रारंभ मानना समीचीन है। इस सप्तक के प्रायः कवियों ने अपने वक्तव्यों में अपनी कविता को नयी कविता की संज्ञा दी है।

मुख्य तथ्य

- नयी कविता हिंदी साहित्य की उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया।
- यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिंदी कविता की नवीन धारा है।
- नई कविता अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है।

✓ आधुनिक हिंदी कविता प्रयोगशीलता की प्रवृत्ति से आगे बढ़ गयी है और अब वह पहले से अपनी पूर्ण पृथक्ता घोषित करने के लिए प्रयत्नशील है। आधुनिक काल की इस नवीन काव्यधारा को अभी तक कोई नया नाम नहीं दिया गया है।

जन्म

केवल नयी कविता नाम से ही अभी इसका बोध कराया जाता है सन १९५४ ई. में डॉ. जगदीश गुप्त और डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादन में नयी कविता काव्य संकलन का प्रकाशन हुआ। इसी को आधुनिक काल के इस नए रूप का आरम्भ माना जाता है। इसके पश्चात इसी नाम के पत्र पत्रिकाओं तथा संकलनों के माध्यम से यह काव्यधारा निरंतर आगे बढ़ती चली आ रही है।

✓ नयी कविता में प्रयोगवाद की संकचिता से ऊपर उठकर उसे अधिक उदार और व्यापक बनाया नयी कविता की आधारभूत विशेषता यह है कि वह किसी भी दर्शन के साथ बंधी नहीं है और वर्तमान जीवन के सभी स्तरों के यथार्थ को नयी भाषा नवीन अभिव्यजना विधान और नूतन कलात्मकता के साथ अभिव्यक्त करने में संलग्न है।

- ✓ हिंदी की यह नयी कविता के परंपरागत रूप से इतनी भिन्न हो गयी है कि इस कविता न कहकर अकविता कहा जाने लगा है।
- ✓ जिस तरह प्रयोगवादी काव्यांदोलन को शुरू करने का श्रेय अज्ञेय की पत्रिका 'प्रतीक' को प्राप्त है उसी तरह नयी कविता आंदोलन को शुरू करने का श्रेय जगदीश प्रसाद गुप्त के संपादकत्व में निकलनेवाली पत्रिका 'नयी कविता' को जाता है।
- ✓ 'नयी कविता' भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा जाता है, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया।
- ✓ अज्ञेय को 'नयी कविता का भारतेन्दु' कह सकते हैं क्योंकि जिस प्रकार भारतेन्दु ने जो लिखा सो लिखा ही, साथ ही उन्होंने समकालीनों को इस दिशा में प्रेरित किया उसी प्रकार अज्ञेय ने भी स्वयं पृथुल साहित्य सृजन किया तथा औरों को प्रेरित-प्रोत्साहित किया।

नयी कविता अनेक अर्थों में प्रयोगवाद का विकास मानी जाती है। उसने प्रयोग की अनेक उपलब्धियों को आत्मसात् किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से नयी कविता 'दूसरा सप्तक' (1951) के बाद की कविता को कहा जाता है।

जहाँ तक 'नयी कविता' के नामकरण का प्रश्न है तो 'नई कविता' नाम भी अज्ञेय द्वारा ही दिया गया है। सन् 1952 ई. में पटना रेडियो से उन्होंने इसकी घोषणा की थी।

लक्ष्मीकांत वर्मा के अनुसार नयी कविता(nayi kavita) मूलतः 1953 ई. में 'नये पत्ते' के प्रकाशन के साथ विकसित हुई

जगदीश गुप्त तथा रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादन में प्रकाशित होने वाले संकलन 'नई कविता' (1954 ई.) में सर्वप्रथम अपने समस्त संभावित प्रतिमानों के साथ प्रकाश में आयी।

- ✓ 1954 ई. में प्रयाग के 'साहित्य सहयोग' नामक सहकारी संस्थान ने नयी कविता का प्रकाशन किया। इसी नई काव्यधारा को उन प्रतिमानों को लेकर विकसित किया गया, जो तत्कालीन भाव-बोध को वहन करते हुए सर्वथा नयी दृष्टि के साथ अवतरित हो रहे थे। नयी कविता(nayi kavita) का मूल स्रोत उस युग-सत्य और युग यथार्थ में निहित है।
- ✓ प्रयोगवाद के अनेक कवियों ने प्रयोग को ही कविता का साध्य मान लिया इसलिए 1950 ई. के बाद एक समय प्रयोगवादी कहे जाने वाले कवियों ने ही प्रयोगवाद को नयी कविता की उदार और सहज अन्तर्धारा में विलयित कर दिया।
- ✓ नयी कविता ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन और व्यक्ति की संश्लिष्ट जीवन-परिस्थितियों का रचनात्मक साक्षात्कार किया।

कवि

आम तौर पर 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' के कवियों को नयी कविता के कवियों में शामिल किया जाता है।

- 'दूसरा सप्तक' के कविगण रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर व हरि नारायण व्यास।
- 'तीसरा सप्तक' के कविगण : कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदार नाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना व मदन वात्स्यायन।
- अन्य कवि : श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सरेंद्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अशोक बाजपेयी, चंद्रकांत देवताले आदि।

नयी कविता आंदोलन में एक साथ भिन्न भिन्न वाद/दर्शन से जुड़े रचनाकार शामिल हुए। यदि अज्ञेय आधुनिक भावबोध वादी अस्तित्ववादी या व्यक्तिवादी हैं तो मुक्तिबोध, केदार नाथ सिंह आदि माक्र्सवादी/समाजवादी; भवानी प्रसाद मिश्र यदि गाँधीवादी हैं तो रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि लोहियावादी समाजवादी और धर्मवीर भारती की रुचि सिर्फ देहवाद में है।

अस्तित्ववाद व आधुनिकतावाद का प्रभाव

नयी कविता के रचनाकारों पर दो वाद या विचारधाराओं- अस्तित्ववाद व आधुनिकतावाद का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा।

- 'अस्तित्ववाद' एक आधुनिक दर्शन है जिसमें यह विश्वास किया जाता है कि मनुष्य के अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए वह खुद उत्तरदायी होता है। वैयक्तिकता, आत्मसम्बद्धता, स्वतंत्रता, अजनबियत, संवेदना, मृत्यु, त्रास, ऊब आदि इसके मुख्य तत्व हैं।

- 'आधुनिकतावाद' का संबंध पूँजीवादी विकास से है। पूँजीवादी विकास के साथ उभरे नये जीवन मूल्यों एवं नयी जीवन पद्धति को आधुनिकतावाद की संज्ञा दी जाती है। इतिहास और परम्परा से विच्छेद, गहन स्वात्म चेतना, तटस्थता और अप्रतिबद्धता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अपने-आप में बंद दुनिया आदि इसके मुख्य तत्व हैं।

नयी कविता की विशेषताएं

- कथ्य की व्यापकता,
- अनुभूति की प्रामाणिकता
- लघुमानववाद, क्षणवाद तथा तनाव व द्वन्द्व।
- मूल्यों की परीक्षा (वैयक्तिकता का एक मूल्य के रूप में स्थापना, निरर्थकता बोध, विसंगति बोध, पीड़ावाद; सामाजिकता)
- लोक सम्पृक्त
- काव्य संरचना (दो तरह की कविताएं : छोटी कविताएं- प्रगीतात्मक, लंबी कविताएं- नाटकीय, क्रिस्टलीय संरचना, छंदमुक्त कविता, फैंटेसी/स्वप्न कथा का भरपूर प्रयोग)
- काव्य भाषा-बातचीत की भाषा, शब्दों पर जोर
- नये उपमान, नये प्रतीक, नये विम्वों का प्रयोग।

यदि छायावादी कविता का नायक 'महामानव' था, प्रगतिवादी कविता का नायक 'शोषित मानव' तो नयी कविता का नायक है 'लघुमानव'।

चरम बिन्दु

1959 ई० का साल ऐतिहासिक दृष्टि से नयी कविता के विकास का प्रायः चरम बिन्दु था। इस बिन्दु से एक रास्ता नयी कविता की रूढ़ियों की ओर जाता था जिसमें विम्व आदि विज्ञापित नुस्खों का अंधानुकरण किया जाता या फिर दूसरा रास्ता सच्चे सृजन का था जो विम्ववादी प्रवृत्ति को तोड़ता।

✓ नये कवियों ने दूसरा रास्ता अपनाया। फलतः धीर-धार काव्य सृजन दिन के दायरे से निकलकर सीधे सपाट कथन की ओर अभिमुख हुआ, जिस अशोक बाजपेयी 'सपाट बयानी' की संज्ञा देते हैं।

नई कविता की शिल्पगत विशेषताएँ

- ✓ नई कविता ने लोक-जीवन की अनुभूति, सौंदर्य-बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया। साथ ही साथ लोक-जीवन के बिंबों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोक-जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया।
- ✓ कविता के ऊपरी आयोजन नई कविता वहन नहीं कर सकती। वह अपनी अन्तर्लय, बिंबात्मकता, नवीन प्रतीक-योजना, नये विशेषणों के प्रयोग, नवीन उपमान में कविता के शिल्प की मान्य धारणाओं से बाकी अलग है।
- ✓ नई कविता की भाषा किसी एक पद्धति में बँधकर नहीं चलती। सशक्त अभिव्यक्ति के लिए बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें अधिक हुआ है। नई कविता में केवल संस्कृत शब्दों को ही आधार नहीं बनाया है, बल्कि विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों को स्वीकार किया गया है।

- नए शब्द भी बना लिए गये हैं- टोये, भभके, खिंचा, सीटी, ठिठुरन, ठसकना, चिडचिड़ी, ठूँठ, विरस, सिराया, फुनगियाना – जैसे अनेक शब्द नई कविता में धड़ल्ले से प्रयुक्त हुए हैं। जिससे इसकी भाषा में एक खुलापन और ताज़गी दिखाई देती है। इसकी भाषा में लोक-भाषा के तत्व भी समाहित हैं।
- नई कविता में प्रतीकों की अधिकता है। जैसे- साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं, न होंगे, नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया। एक बात पूँछु? उत्तर दोगे! फिर कैसे सीखा डँसना? विष कहाँ पाया? (अज्ञेय)
- नई कविता में बिंब भी विपुल मात्रा में उपलब्ध है।
- नई कविता की विविध रचनाओं में शब्द, अर्थ, तकनीकी, मुक्त आसंग, दिवास्वप्न, साहचर्य, पौराणिक, प्रकृति संबंधी काव्य बिंब निर्मित किए गये हैं। जैसे- सामने मेरे सर्दी में बोरे को ओढ़कर, कोई एक अपने, हाथ पैर समेटे, काँप रहा, हिल रहा, -वह मर जायेगा। (मुक्तिबोध)
- नई कविता में छंद को केवल घोर अस्वीकृति ही मिली हो- यह बात नहीं, बल्कि इस क्षेत्र में विविध प्रयोग भी किये गये हैं।

- नये कवियों में किसी भी माध्यम या शिल्प के प्रति न तो राग है और न विराग।
- गतिशीलता के प्रभाव के लिए संगीत की लय को त्यागकर नई कविता ध्वनि-परिवर्तन की ओर बढ़ती गई है।
- एक वर्ण्य विषय या भाव के सहारे उसका सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करते हुए लंबी कविता या पूरी कविता लिखकर उसे काव्य-निबंध बनाने की पुरानी शैली नई कविता ने त्याग दी है।
- नई कविता के कवियों ने लंबी कविताएँ भी लिखी हैं। किन्तु वे पुराने प्रबंध काव्य के समानान्तर नहीं हैं।
- नई कविता का प्रत्येक कवि अपनी निजी विशिष्टता रखता है। नए कवियों के लिए प्रधान है सम्प्रेषण, न कि सम्प्रेषण का माध्यम।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नई कविता कथ्य और शिल्प-दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

नई कविता की प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

भग्नदूत (1933), चिन्ता (1942), इत्यलम् (1946),

हरी घास पर क्षण भर (1949), बावन अहेरी (1954), इंद्रधनुष रौंदे हुए थे (1957), अरी ओ करुणा प्रभामय (1959), आँगन के पार द्वार (1961), पूर्वा (1965), सुनहले शैवाल (1966), कितनी नावों में कितनी बार (1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969), सागर मुद्रा (1970), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1973), महावृक्ष के नीचे (1977), नदी की बाँक छाया (1981), ऐसा कोई घर आपने देखा है (1986)।

प्रमुख कविताएँ – (1) असाध्यवीणा, (2) कलगी बाजरे की, (3) साँप (4) नदी के द्वीप (5) यह दीप अकेला।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

(1) चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964), (2) भूरि-भूरि खाक
धूल (1980 ई.)

प्रमुख कविताएँ-अंधेरे में, ब्रह्मराक्षस, अंतःकरण का आयतन आदि।

गिरिजा कुमार माथुर

(1) मंजीर (1941), (2) नाश और निर्माण (1946), (3) धूप के धान, (4) शिला पंख चमकीले (5) छाया मत छूना, (6) भीतरी
नदी की यात्रा (1975), (7) अभी कुछ और (8) साक्षी रहे वर्तमान, (9) पृथ्वी कल्प

प्रभाकर माचवे

(1) मेपल (2) स्वप्नभंग, (3) अनुक्षण।

भारतभूषण अग्रवाल

(1) छवि के बंधन (2) जागते रहो (3) मुक्ति मार्ग (4) ओ अप्रस्तुत मन (5) अनुपस्थिति लोग (6) कागज के फूल (7) उतना वह सूरज है (8) अग्निलीक (1976)

शमशेर बहादुर सिंह

(1) कुछ कविताएँ (1959), (2) कुछ और कविताएँ (1961), (3) चुका भी हूँ मैं नहीं (1975), (4) इतने अपने आप (1980), (5) उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980), (6) बातें बोलेगी (1981), (7) काल तुमसे होड़ है मेरी (1988), (8) कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ (1995), (9) सुकून की तलाश (1998)।

केदारनाथ सिंह

(1) अभी बिल्कुल अभी (1976), (2) जमीन पक रही है (1976), (3) अकाल में सारस (1976), (4) यहाँ से देखो (2005), (5) बाघ (2005), (6) उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ (2005), तालस्टाय और साईकिल (1995)।

कुँवर नारायण

(1) चक्रव्यूह (1956), (2) परिवेश हम-तुम (1961), (3) आमने-सामने (1979), (4) कोई दूसरा नहीं (1993), (5) आत्मजयी (प्रबन्धकाव्य, 1965), (6) वाजश्रवा के बहाने (प्रबंध काव्य 2008), (7) इन दिनों (2002)।

भवानी प्रसाद मिश्र

(1) गीत फरोश (1953), (2) चकित है दुःख (1968), (3) अंधेरी कविताएँ (1968), (4) गांधी पंचशती (1969), (5) बुनी हुई रस्सी (1971), (6) खुशबू के शिलालेख (1973), (7) व्यक्तिगत (1973), (8) अंतर्गत (1979), (9) अनाम तुम आते हो (1979), (10) परिवर्तन जिए (1976), (11) इद्रमम् (1977), (12) त्रिकाल संध्या (1978), (13) शरीर, कविता, फसलें और फूल (1980), (14) मानसरोवर दिन (1981), (15) सम्प्रति (1982), (16) नीली रेखा तक (1984), (17) तूस की आग (1985), (18) कालजयी (खण्ड काव्य-1980)

प्रमुख कविताएँ- (1) कमल के फूल (2) सतपूड़ा के जंगल (3) वाणी की दीनता, (4) गीत फरोश (5) टूटने का सुख।

✓ रामविलास शर्मा

(1) रूप तरंग (1956), (2) सदियों के सोए जाग उठे (1988), (3) बुद्ध वैराग्य तथा प्रारंभिक कविताएँ (1997)।

✓ रघुवीर सहाय

(1) सीढ़ियों पर धूप में (1960), (2) आत्महत्या के विरुद्ध (1967), (3) हँसी हँसी जल्दी हँसो (1975), (4) लोग भूल गए हैं (1982), (5) कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ (1989), (6) एक समय था।

✓ विजयदेव नारायण साही

(1) साखी (2) मछलीघर (3) संवाद तुमसे।

✓ हरिनारायण व्यास

(1) मृग और तृष्णा, (2) त्रिकोण पर सूर्योदय, (3) बरगद के चिकने पत्ते।

नरेश मेहता

(1) वन पाखी सुनो (1957), (2) बोलने दो चीजों को (1961), (3) मेरा समर्पित एकांत (1963), (4) पिछले दिनों नंगे पेरों, (5) चैत्या, (6) उत्सवा (1979), (7) संशय की एक रात (प्रबंध काव्य-1962), (8) महाप्रस्थान (1964), (9) प्रवाद पर्व (1977), (10) शबरी (1977), (11) अरण्य, (12) आखिरी समुद्र से तात्पर्य, (13) प्रार्थना पुरुष (1985)।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(1) काठ की खंटियाँ (1959), (2) बाँस का पुल (1963), (3) एक सूनी नाव (1966), (4) गर्म हवाएँ (1966), (5) कुआनी नदी (1973), (6) जंगल का दर्द (1976), (7) खूंटियों पर टंगे लोग (1982), (8) क्या कहकर पुकारूँ (9) कोई मेरे साथ चले।

धर्मवीर भारती

(1) ठण्डा लोहा (1952), (2) अंधा युग (1955), (3) कनुप्रिया (1957), (4) सात गीत वर्ष (1957), (5) देशांतर।

उपर्युक्त कवियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य:

⇒ अज्ञेय अस्तित्ववाद में आस्था रखने वाले कवि है।

⇒ 'असाध्यवीणा' अज्ञेय की प्रमुख कृति है, इसका मूल भाव 'अहं का विसर्जन' 'समर्पण की भावना' है। इसका कथानक चीनी-जापानी कथा ओकाकुरा से प्रभावित है।

नदी के द्वीप में व्यक्ति, संस्कृति और समाज तीनों के अस्तित्व की बात की गई है।

नदी के द्वीप के प्रतीक

- द्वीप - व्यक्ति/शिशु

- नदी - परंपरा/माँ

- भूखण्ड - समाज/पिता

⇒ मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' कविता का प्रथम प्रकाशन 'कल्पना' पत्रिका में 1964 में 'आशंका के द्वीप' 'अंधेरे में' नाम से हुआ।

⇒ मुक्तिबोध ने 'अंधेरे में' कविता की रचना फैंटेसी में की है।

शमशेर बहादुर सिंह के अनुसार -

"यह कविता देश के आधुनिक जन इतिहास का स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात् का एक दहकता इस्पाती दस्तावेज है।"

नामवर सिंह के अनुसार 'अंधेरे में' कविता 'अस्मिता की खोज' है।

रामविलास शर्मा ने 'अंधेरे में' कविता को 'आरक्षित जीवन की कविता' कहा है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है- 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' एक बड़े कलाकार की स्कैच-बुक लगता है।

⇒ मुक्तिबोध पर टालस्टाय, बर्ग सॉ और मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव है।

⇒ शमशेर बहादुर को मलजय ने 'मूड्स का कवि' कहा है।

⇒ शमशेर बहादुर सिंह के अनुसार – 'टेक्नीक में एजरा पाउंड शायद मेरा सबसे बड़ा आदर्श बन गया था।'

⇒ रामचन्द्र तिवारी ने शमशेर बहादुर के गद्य को 'हिन्दी का जातीय गद्य' कहा है।

⇒ भवानी प्रसाद मिश्र को 'सहजता का कवि' कहा जाता है।

⇒ भवानी प्रसाद मिश्र को 'हिन्दी कविता का गांधी' कहा जाता है।

अज्ञेय

प्रयोगवादी/नई कविता के प्रमुख कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ –

यह दीप अकेला स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता

पर इसको भी पंक्ति दे दो

किन्तु हम हैं द्वीप।

हम धारा नहीं है,

स्थिर समर्पण है हमारा हम सदा से द्वीप है स्त्रोतास्विनी के।

साँप! तुम सभ्य तो हुए नहीं

नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया

तब कैसे सीखा डँसना-विष कहाँ पाया

मौन भी अभिव्यक्ति है

जितना तुम्हारा सच है

उतना ही कहो

भोर का बाबरा अहेरी

पहले बिछाता है आलोक को

लाल-लाल कनिया

वही परिचित दो आँखे ही

चिर माध्यम है

सब आँखों से सब दर्दों से

मेरे लिए परिचय का

ये उपनाम मैले हो गये हैं

देवता इन प्रतीकों से कर गए है कूच

एक तीक्ष्ण अपांग से कविता उत्पन्न हो जाती है

एक चुंबन से प्रणय फलीभूत हो जाता है।

मुझे स्मरण है

और चित्र/प्रत्येक स्तब्ध, विजडित करता है मुझे

सुनता हूँ मैं

आ, मुझे भुला
तू उतर बीन के तारों में
अपने से गा/अपने को गा
अपने खग कुल को मुखरित कर

राजकुमुट सहसा हलका हो आया था
मानो हो फूल सिरिस का
ईश्र्या, महत्त्वकांक्षा, द्वेष, चाटुता
सभी पुराने झड़ गये

हरी तलहटी में, छोटे की ओट, ताल पर
बंधे समय, वन-पशुओं की नानाविध
आतुर-तृप्त पुकारे
गर्जन, धुर्धर, चीख, भूँक, हुक्का
चिचिराहट है

मुक्तिबोध

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य-पीड़ा है।

ओ मेरे आदर्शवादी मन

ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन

बहुत-बहुत ज्यादा लिया

दिया बहुत-बहुत कम

मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे, उठाने होंगे

तोड़ने होंगे मठ और गढ़ सभी

✓ कविता कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ
वर्तमान समाज चल नहीं सकता
पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता

खोजता हूँ पठार, पर्वत, समुद्र
जहाँ मिल सके मुझे
मेरी वह खोई हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार
आत्म-संभवा।

शमशेर बहादुर सिंह

एक पीली शाम

पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता

बात बोलेगी, हम नहीं

भेद खोलेगी, बात ही

चूका भी हूँ मैं नहीं

कहाँ किया मैंने प्रेम अभी

घिर आया समय का रथ कहीं

ललिता से मढ़ गया है राग।

हाँ, तुम मुझसे प्रेम करो
जैसे मछलियाँ लहरों से करती है।

दोपहर बाद की धूप-छाँह में खड़ी
इंतजार की ठेलगाड़ियाँ
जैसे मेरी पसलियाँ
खाली बोरे सूजों से रफू किये जा रहे हैं।

भूलकर जब राह-जब जब राह भटका मैं
तुम्हीं झलके हो महाकवि
सघन तम की आँख बन मेरे लिए।

भवानी प्रसाद मिश्र

जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ

मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ

मैं किसिम किसिम के गीत बेचता हूँ।

सतपुड़ा के घने जंगल

नींद में डूबे हुए से

उँघते अनमने जंगल।

✓ टूटने का सुख

बहुत सारे बंधनों को आज झटका लग रहा है

टूट जायेंगे कि मुझको आज खटका लग रहा है।

फूल लाया हूँ कमल के

क्या करूँ इनका

छोड़ दूँ

हो जाए जी हल्का

रघुवीर सहाय

राष्ट्रगान में भला कौन वह भारत भाग्य विधाता है
फटा सुथन्ना पहले, जिसका गुन हरचरना गाता है

मैं अपनी एक मूर्ति बनाता हूँ
और एक ढहाता हूँ
और आप कहते हैं कि कविता की है।

कितना अच्छा था छायावाद
एक दुःख लेकर वह गान देता था
कितना कुशल था प्रगतिवादी
हर दुःख का कारण पहचान लेता था

✓ खबर हमको पता है हमारा आतंक है
हमने बनाई है
फिर वो लिखते हैं
खबर वातानुकूलित कक्ष में तय कर रही होगी
करेगा कौन रामू के तले की भूमि पर कब्जा

लोग भूल जाते हैं
अत्याचारी का चेहरा मुस्काने पर

भीड़ में मैल खोरी गंध मिली
⇒ भीड़ में आदिम मूर्खता की गंध मिली
भीड़ में नहीं मिली मुझे मेरी गंध

क्रांतिकारी लेखक को आशा है
कि औरों पर उसका अविश्वास
उसको तो उसके जीवन में
एक बड़ा आदमी बना देगा।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

लोकतंत्र को जूते की तरह
लाठी में लटकाए
भागे जा रहे हैं सभी
सीना फुलाए

मैं नया कवि हूँ
इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है

लीक पर चले जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं

केदार नाथ सिंह

मैंने जब भी सोचा

मुझे रामचन्द्र शुक्ल की मूँछे याद आई

मैं पूरी ताकत के साथ

शब्दों को फेंकना चाहता हूँ।

साठोत्तरी कविता

सन् 1960 ई. के बाद लघु पत्रिकाओं की बाढ़ आ गई तथा प्रत्येक लघु पत्रिका की छत्रछाया में कोई-न-कोई नये वाद अथवा काव्यान्दोलन पनपने लगे। जो आन्दोलन अपेक्षाकृत अधिक स्थिर एवं सुदृढ़ हो पाए, वे निम्न हैं –

⇒ निषेध मूलक

⇔ संघर्ष मूलक

⇒ आस्थामूलक

निषेधमूलक वर्ग में उन काव्यान्दोलनों को समाहित किया जाता है, जिन्होंने परंपरागत सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का निषेध करते हुए घोर व्यक्तिवाद, उच्छृंखल यौनवाद एवं नग्न भोगवाद को प्रश्रय दिया।

संघर्ष मूलक वर्ग के आन्दोलनों में सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति असंतोष तथा आक्रोश व्यक्त करते हुए उनके विरोध में संघर्ष का आह्वान किया गया।

आस्थामूलक वर्ग के आन्दोलनों में परंपरागत मूल्यों को स्वीकारते हुए उनकी पुनः प्रतिष्ठा पर जोर दिया गया।

प्रमुख काव्यांदोलन एवं प्रवर्तक

काव्यांदोलन	प्रवर्तक
अकविता	श्याम परमार
बीट पीढ़ी	राजकमल चौधरी
अस्वीकृत कविता	श्रीराम शुक्ल
आज की कविता	हरीश मादानी
प्रतिबद्ध/वाम कविता	डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव
सहज कविता	डॉ. रवीन्द्र भ्रमर
ताजी कविता	लक्ष्मीकांत वर्मा
समकालीन कविता	डॉ. विशम्भरनाथ उपाध्याय
कैप्सूल/सूत्र कविता	डॉ. ओंकारनाथ त्रिपाठी

- ◆ नई कविता के नामकरण का श्रेय अज्ञेय को जाता है ।
- ◆ उन्होंने 1952 में आकाशवाणी पटना से प्रसारित एक रेडियो वार्ता में नई कविता नाम का प्रयोग किया ।
- ◆ 1954 में इलाहाबाद से जगदीशगुप्त व रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादन में नई कविता पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ ।
- ◆ डॉ बच्चन सिंह ने नई कविता को प्रगतिवादी व प्रयोगवाद दो अतिवादी छोरों को मिलाने वाली कविता कहा ।
- ◆ नई कविता का आरंभ और नामकरण अंग्रेजी के न्यू पोएट्री काव्य आंदोलन की तर्ज पर हुआ ।
- ◆ लघु मानव की प्रतिष्ठा नई कविता की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं ।
- ◆ लघु मानव से तात्पर्य साधन हीन , उपेक्षित साधारण व्यक्ति से हैं ।

◆ नई कविता का रूप स्पष्ट करने के लिए निम्न आलोचनात्मक कृतियों का प्रकाशन हुआ :-

1. नई कविता के प्रतिमान- लेखक डॉक्टर लक्ष्मीकांत वर्मा
- 2 कविता के नए प्रतिमान -लेखक डॉक्टर नामवर सिंह
- 3 नई कविता का आत्म संघर्ष -लेखक गजानन माधव मुक्तिबोध
- 4 नई कविता सीमाएं और संभावनाएं -गिरिजाकुमार माथुर
- 5 .नई कविता के बहाने लघु मानव पर -विजयदेव नारायण साही ।

◆ नया प्रतीक , नये पत्ते , क, ख, ग, प्रतिमान आदि पत्र-पत्रिकाओं ने नई कविता को प्रोत्साहन प्रदान किया ।

◆ नई कविता के कवियों ने रस सिद्धांत को चुनौती देकर रस के स्थान पर द्वन्द्व, तनाव एवं बेचैनी को काव्य की आत्मा माना।

प्रयोगवाद और नई कविता के कवि : कालक्रमानुसार

- 1911-1987 ई० अज्ञेय
- 1911-1993 ई० शमशेर बहादुर सिंह
- 1914-1985 ई० भवानी प्रसाद मिश्र
- 1917-1964 ई० गजानन माधव मुक्तिबोध
- 1917-1991 ई० प्रभाकर माचवे
- 1919-1975 ई० भारत भूषण अग्रवाल
- 1919-1994 ई० गिरिजा कुमार माथुर
- 1922-2000 ई० नरेश मेहता
- 1922-2002 ई० लक्ष्मीकान्त वर्मा
- 1922-1992 ई० रघुवीर सहाय
- 1924 ई० रामदरश मिश्र
- 1924-1982 ई० विजयदेव नारायण साही
- 1926-2001 ई० जगदीश गुप्त
- 1926-1997 ई० धर्मवीर भारती
- 1927-1983 ई० सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
- 1927 ई० कुँवर नारायण
- 1931-1986 ई० श्रीकान्त वर्मा
- 1934 ई० केदारनाथ सिंह
- 1936-1975 ई० धूमिल